

## श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 17 — कालिय और दावाग्नि

5 October 2026



आधी रात को जब भीषण दावानल सोए हुए व्रजवासियों और गोधन को चारों ओर से घेर लेता है, तब अनन्त शक्ति के स्वामी प्रभु कृष्ण उस समूचे प्रलयकारी ज्वाला को अपने भीतर समेट लेते हैं, और उनके भक्त निर्भय बच जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्कटम् में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह सत्रहवाँ अध्याय पिछले अध्याय में छूटे एक प्रश्न का उत्तर देता है और फिर कालिय के उद्धार के दिन को एक और आश्चर्य के साथ समाप्त करता है। राजा परीक्षित पूछते हैं कि सर्प कालिय ने अपना घर क्यों छोड़ा और केवल गरुड़ से उसका क्या बैर था; और शुकदेवजी बताते हैं कि कैसे मद में चूर कालिय ने गरुड़ को दी जाने वाली बलि चुरा ली, और गरुड़ के प्रचण्ड पंख से भगाए जाने पर उसने यमुना के उस एकमात्र कुण्ड की शरण ली जहाँ गरुड़ प्रवेश न कर सकता था — जो ऋषि सौभरि के प्राचीन वचन से रक्षित था। फिर, जब कृष्ण व्रज के असीम आनन्द के बीच कुण्ड से निकलते हैं, और थके व्रजवासी उस रात नदी के तट पर विश्राम करते हैं, तब अन्धकार में एक अकस्मात् दावाग्नि उन्हें घेर लेती है; और अनन्त प्रभु, अपने लोगों को संकट में देखकर, उस अग्नि को पी जाते हैं और सबकी रक्षा करते हैं।

## अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 17 (सप्तदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: कालिय का इतिहास और दावाग्नि-पान
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: व्रज में यमुना और वृन्दावन का आसपास का वन
- केंद्रीय विषय: कालिय के घर छोड़ने का कारण; गरुड़ के प्रति उसका अपराध; ऋषि सौभरि का रक्षक वचन; कृष्ण की व्रज में आनन्दमयी वापसी; और अर्धरात्रि की दावाग्नि का पान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 17, श्लोक 1-25
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

## पूर्व अध्याय का संदर्भ

सोलहवें अध्याय में कृष्ण ने विषैली यमुना में कूदकर सर्प कालिय के फणों पर नृत्य किया, और उसकी पत्नियों की प्रार्थना पर उसे क्षमा कर समुद्र में भेज दिया तथा नदी को शुद्ध किया। यह अध्याय पहले बताता है कि कालिय उस कुण्ड में क्यों बसा था, और फिर दावाग्नि की लीला के साथ उस दिन को पूर्ण करता है।

## परीक्षित का प्रश्न

कथा में मग्न राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से पूछा कि सर्प कालिय ने सर्पों के घर रमणक को क्यों छोड़ा, और उसने केवल गरुड़ के साथ ऐसा क्या अपराध किया जिससे वह महान् पक्षी उसके विरुद्ध हो गया। शुकदेवजी ने अभी-अभी सुनी लीला के पीछे के इतिहास को सुनाकर उत्तर दिया।

## गरुड़ के प्रति कालिय का अपराध

बहुत पहले, शुकदेवजी ने बताया, सर्पों के लिए एक व्यवस्था नियत की गई थी: मास-मास, अपने निश्चित दिनों पर, प्रत्येक सर्प को अपनी रक्षा के बदले एक भेंट लाकर एक निश्चित वृक्ष के मूल में प्रभु के वाहन बलशाली गरुड़ को बलि रूप में रखनी होती थी। शेष सभी सर्पों ने इस नियम का पालन निष्ठापूर्वक किया। किन्तु कालिय अकेला इससे मुकर गया — अपने ज़हर के बल पर अभिमान से फूला हुआ वह सारी व्यवस्था को ठुकराकर गरुड़ के हिस्से को चुपचाप हड़प लेता रहा।

विषवीर्यमदाविष्टः काद्रवेयस्तु कालियः ।

कदर्थीकृत्य गरुडं स्वयं तं बुभुजे बलिम् ॥ ४ ॥

*viṣa-vīrya-madāviṣṭaḥ kādraveyas tu kāliyaḥ kadamthi-kṛtya garuḍam svayam tam bubhuje balim*

अर्थ: किन्तु कद्रुपुत्र कालिय, अपने विष की शक्ति के मद में चूर होकर, गरुड़ का तिरस्कार कर उनके लिए अलग रखी बलि को स्वयं ही खा गया। (स्कन्ध 10, अध्याय 17, श्लोक 4)



अपने विष के मद में चूर कालिय ने गरुड़ को दी जाने वाली बलि स्वयं खा ली; क्रुद्ध होकर गरुड़ ने उसे अपने स्वर्णिम पंख से प्रहार कर भगा दिया (श्लोक 2-8)।

यह सुनकर प्रभु के प्रिय वाहन गरुड़ क्रोध में और महान् वेग से कालिय को मारने झपटे। विष-अस्त्रधारी सर्प अपने अनेक फणों सहित उठकर उन्हें डँसने लगा; किन्तु तार्क्ष्यपुत्र ने उसे झटककर अपने स्वर्ण-सी दीप्ति वाले बाएँ पंख से प्रहार किया। गरुड़ के पंख से आहत और अत्यन्त विह्वल होकर कालिय यमुना के उस एकमात्र कुण्ड में भाग गया जहाँ गरुड़ नहीं पहुँच सकते थे।

सुपर्णपक्षाभिहतः कालियोऽतीव विह्वलः ।

हृदं विवेश कालिन्द्यास्तदगम्यं दुरासदम् ॥ ८ ॥

*suparṇa-pakṣābhihataḥ kāliyo 'tīva vihvalaḥ hradam viveśa kālindyās tad-agamyam durāsadam*

अर्थ: गरुड़ के पंख से आहत और अत्यन्त विह्वल कालिय यमुना के उस कुण्ड में प्रविष्ट हो गया जो गरुड़ के लिए अगम्य और दुर्गम था। (स्कन्ध 10, अध्याय 17, श्लोक 8)

## ऋषि सौभारे का वचन

गरुड़ उस कुण्ड में क्यों प्रवेश न कर सकते थे? शुकदेवजी ने बताया कि एक बार, बहुत पहले, भूखे गरुड़ ने वहाँ जल के किनारे रहने वाले ऋषि सौभारि के निषेध के विरुद्ध एक जलचर को पकड़कर खा लिया था। अपने नायक की मृत्यु पर शोक करती मछलियों को देखकर करुणामय ऋषि ने, उस स्थान के प्राणियों के हित की कामना से, एक दृढ़ वचन कहा।

अत्र प्रविश्य गरुडो यदि मत्स्यान् स खादति ।

सद्यः प्राणैर्वियुज्येत सत्यमेतद् ब्रवीम्यहम् ॥ ११ ॥

*atra praviśya garuḍo yadi matsyān sa khādati sadyaḥ prāṇair viyuḥyeta satyam etad bravīmy aham*

अर्थ: यदि गरुड़ यहाँ पुनः प्रवेश कर मछलियों को खाएगा, तो वह तत्क्षण अपने प्राण खो देगा — यह मैं सत्य कहता हूँ। (स्कन्ध 10, अध्याय 17, श्लोक 11)



बहुत पहले ऋषि सौभारि ने, इस कुण्ड की मछलियों के लिए दुखी होकर, यह वचन दिया कि यदि गरुड़ यहाँ कभी उन्हें खाएगा तो अपने प्राण खो देगा — और इस प्रकार यह कुण्ड ऐसा आश्रय बन गया जहाँ गरुड़ प्रवेश न कर सके (श्लोक 9-12)।

यह सत्य केवल कालिय को ज्ञात था, और किसी अन्य सर्प को नहीं। और इसीलिए, गरुड़ के भय से, कालिय उसी कुण्ड में आ बसा — जब तक अन्ततः कृष्ण ने उसे भगा न दिया। इस प्रकार शुकदेवजी ने दिखाया कि सर्प का दीर्घ आश्रय और उसका अन्तिम निर्वासन दोनों प्रभु की विशाल योजना के भीतर ही घटित हुए।

## व्रज का आनन्दमय पुनामेलन

फिर शुकदेवजी कालिय के उद्धार के दिन पर लौटे। कृष्ण दिव्य मालाओं, सुगन्धियों और वस्त्रों से सजे, महान् रत्नों और स्वर्ण से ढके कुण्ड से निकले। उन्हें देखकर सब गोप ऐसे उठ खड़े हुए मानो उनके प्राण लौट आए हों, और उमड़ते प्रेम से बार-बार उन्हें गले लगाया। यशोदा, रोहिणी, नन्द, गोपियाँ और गोप सब उनके पास आए, उनकी दीर्घ चिन्ता समाप्त हुई; कहा जाता है कि उस स्थान के सूखे वृक्ष तक आनन्द से हरे हो उठे। बलराम ने अपने भाई को हँसते हुए गले लगाया, क्योंकि वे उनकी शक्ति जानते थे, और उन्हें बार-बार गोद में उठाया; और गौओं, बैलों तथा बछड़ों को परम आनन्द हुआ।



कृष्ण दिव्य मालाओं, रत्नों और स्वर्ण से सजे कुण्ड से निकलते हैं; गोप ऐसे उठ खड़े होते हैं मानो उनके प्राण लौट आए हों, और समस्त व्रज आनन्द से उन्हें गले लगाता है (श्लोक 13-19)।

ब्राह्मण और कुल के बुजुर्ग अपनी पत्नियों सहित नन्द के पास आकर बोले, 'तुम्हारा पुत्र कालिय द्वारा पकड़ा गया था, फिर भी बड़े सौभाग्य से मुक्त हो गया; कृष्ण के उद्धार के लिए ब्राह्मणों को दान दो।' प्रसन्न हृदय से नन्द ने गौएँ और स्वर्ण दान किया। और महाभागा यशोदा, जिन्होंने अपने पुत्र को खोकर पुनः पाया, ने उन्हें गले लगाया, गोद में उठाया, और बार-बार आनन्द के आँसू बहाए।

## अर्धरात्रि की दावाग्नि

उस रात, भूख, प्यास और दिन के परिश्रम से थके व्रजवासी घर न लौट सके और वहीं यमुना के तट पर विश्राम करने लगे। किन्तु अर्धरात्रि में सूखे ग्रीष्म-वन में उठी एक महान् अग्नि ने सोते व्रज को चारों ओर से घेर लिया और उन्हें जलाने लगी। भयभीत होकर जागते और अग्नि से झुलसते व्रजवासी कृष्ण की शरण में दौड़े — उन प्रभु की, जो अपनी माया से मनुष्य-बालक रूप में उनके बीच प्रकट थे।

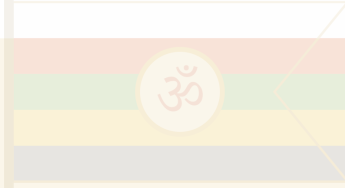


दावाग्नि को निकट आते देख जागकर व्रजवासी कृष्ण और बलराम की शरण लेते हैं, उनके अभय चरणों को छोड़ने में असमर्थ (श्लोक 21-24)।

‘कृष्ण, कृष्ण, महाभाग! हे अमित पराक्रमी बलराम!’ वे पुकार उठे। ‘यह अत्यन्त भयंकर अग्नि हमें, आपके अपने जनों को, निगल रही है। हे प्रभु, अपने मित्रों को इस दुस्तर मृत्यु-अग्नि से बचाइए; क्योंकि हम आपके चरणों को छोड़ नहीं सकते, जो अकेले अभय के आश्रय हैं।’

सुदुस्तरान्नः स्वान् पाहि कालाग्नेः सुहृदः प्रभो ।

न शक्नुमस्त्वच्चरणं सन्त्यक्तुमकुतोभयम् ॥ २४ ॥



*su-dustarāṇ naḥ svān pāhi kālāgneḥ suhṛdaḥ prabho na śaknumas tvac-caraṇaṁ santyaktum akuto-bhayaṁ*

अर्थ: हे प्रभु, अपने इन जनों और मित्रों को इस दुस्तर विनाश-अग्नि से बचाइए; क्योंकि हम आपके उन चरणों को छोड़ने में असमर्थ हैं जो पूर्ण अभय प्रदान करते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 17, श्लोक 24)

## कृष्ण दावाग्नि को पी जाते हैं

अपने भक्तों की यह असहाय दशा देखी न गई, और उस सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ने उस भीषण ज्वाला को निगलकर पल भर में सबको बचा लिया। एक ही शान्त कर्म में उन्होंने उनके भय को सुरक्षा में बदल दिया, और कालिय के उद्धार के उस दीर्घ दिन को वैसे ही समाप्त किया जैसे वह आरम्भ हुआ था — शरणागतों की रक्षा करते प्रभु के साथ।

इत्थं स्वजनवैक्लव्यं निरीक्ष्य जगदीश्वरः ।

तमग्निमपिबत्तीव्रमनन्तोऽनन्तशक्तिधृक् ॥ २५ ॥

*itthaṁ sva-jana-vaiklavyaṁ nirikṣya jagad-īśvaraḥ tam agnim apibat tīvram ananto 'nanta-śakti-dhṛk*

अर्थ: अपने जनों की व्याकुलता देखकर अनन्त शक्ति के धारक जगदीश्वर अनन्त प्रभु ने उस भयंकर अग्नि को पी लिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 17, श्लोक 25)

## इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. अभिमान अपना ही पतन बुलाता है। गरुड़ के प्रति कालिय का तिरस्कार और बलि की चोरी (श्लोक 4) उसके सम्पूर्ण निर्वासन की शृंखला आरम्भ करती है। अहंकार, विशेषकर पवित्र के प्रति, चुपचाप हमारे ही विनाश की भूमिका रचता है।
2. प्रभु की योजना हमारे भटकावों को भी समेट लेती है। गरुड़ से सुरक्षित उस एकमात्र कुण्ड में कालिय का आश्रय, जो बहुत पहले एक ऋषि के वचन से बना था, स्वयं कृष्ण से उसके मिलन के मार्ग का ही अंग था। कुछ भी प्रभु की विशाल योजना से बाहर नहीं।
3. सन्त की करुणा की शक्ति चिरस्थायी होती है। मछलियों की रक्षा का सौभरि का वचन (श्लोक 11) युगों तक घटनाओं को आकार देता रहा। सन्तों की कृपा, छोटे-से-छोटे प्राणियों को भी दी गई, अपने क्षण से कहीं आगे तक गूँजती है।
4. भक्त उनके चरण नहीं छोड़ सकते। अग्नि में ब्रजवासी घोषित करते हैं कि वे कृष्ण के अभय चरण नहीं छोड़ सकते (श्लोक 24)। जिस आत्मा ने उनकी शरण का स्वाद चख लिया, वह ठीक सबसे बड़े संकट में उनसे लिपट जाती है।
5. प्रभु शरणागतों की रक्षा करते हैं। कृष्ण सहज ही अग्नि पी जाते हैं (श्लोक 25)। कोई भी संकट, चाहे कितना ही प्रचण्ड हो, उन्हें भस्म नहीं कर सकता जिन्होंने उन्हें अपना आश्रय बना लिया।

## एक भक्तिमय चिन्तन

यह छोटा अध्याय कालिय के दीर्घ दिन को एक ऐसे चित्र के साथ समाप्त करता है जिसे हर भक्त थाम सकता है: अन्धकार में अग्नि से घिरे ब्रजवासी पुकारते हैं कि वे कृष्ण के चरण नहीं छोड़ सकते — और प्रभु सहज ही अग्नि को पी जाते हैं। जो हमें विस्मित करता है वह केवल चमत्कार नहीं, अपितु उन जनों के वचन हैं। वे पहले बचाए जाने की माँग नहीं करते; वे कहते हैं कि वे उनके चरण नहीं छोड़ सकते। उनकी शरण उद्धार की कोई युक्ति नहीं, अपितु उनके हृदयों का गूढ़तम सत्य है, और उद्धार स्वयं ही उसके पीछे आ जाता है। शायद यही इस अध्याय की, और कालिय की कथा की भी, सम्पूर्ण शिक्षा है। कालिय का अभिमान उसे निर्वासन में और अन्ततः कृष्ण के नृत्य करते चरणों के नीचे ले आया; गोपों का प्रेम उन्हें, भय में भी, उन्हीं चरणों से लिपटा देता है और बचा लेता है। सर्प और भक्त में अन्तर प्रभु के चरणों की निकटता का नहीं, क्योंकि दोनों उन तक लाए जाते हैं, अपितु इसका है कि हम अभिमान में झुकाए जाने आते हैं या प्रेम में शरण पाने। जब जीवन की अग्नियाँ घेर लें, तब हम भी, हर वस्तु से पहले, यही कहना सीख लें कि हम उन्हें नहीं छोड़ सकते।

## एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज जब कोई चिन्ता या भय आप पर दबाव डाले, तब आपकी पहली प्रतिक्रिया कोई योजना नहीं, अपितु शरण की एक प्रार्थना हो, ब्रजवासियों की प्रतिध्वनि करते हुए: 'मैं आपके चरण नहीं छोड़ सकता।' किसी अन्य सहायता की ओर हाथ बढ़ाने से पहले प्रभु की शरण लेना आपकी सहज वृत्ति बने, इस विश्वास के साथ कि जिन्होंने दावाग्नि पी ली, वे आपको भी आपकी अग्नि के पार ले जा सकते हैं। इस लीला को स्मरण करें और उनकी रक्षा में विश्राम पाएँ। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

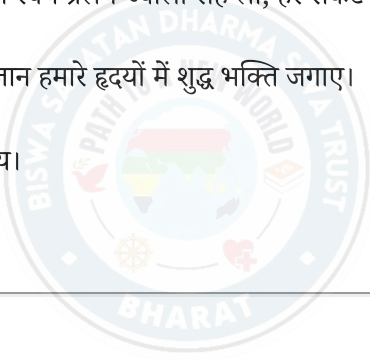
## उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह सत्रहवाँ अध्याय कालिय की कथा को पूर्ण करता है और उसके उद्धार के दिन को समाप्त करता है। शुकदेवजी बताते हैं कि कैसे गरुड़ के प्रति सर्प का अभिमान और ऋषि सौभरि का प्राचीन वचन उसे ठीक उसी कुण्ड तक ले आए जहाँ कृष्ण उसका दमन करने वाले थे — यह दिखाते हुए कि एक भगोड़े का छिपने का स्थान भी प्रभु की योजना के भीतर ही था। फिर कृष्ण ब्रज के असीम आनन्द के बीच जल से निकलते हैं, और आधी रात को जब दावानल उनके सोए हुए जनों को घेर लेता है, तब वे उस विकराल ज्वाला को निगलकर सबको सुरक्षित कर देते हैं। निर्वासित करने वाले अभिमान से लेकर शरण देने वाले प्रेम तक, यह अध्याय हमारे समक्ष प्रभु के चरणों तक आने के दो मार्ग रखता है, और हमें गोपों की अविस्मरणीय पुकार के साथ छोड़ जाता है कि वे उन्हें नहीं छोड़ सकते। हम भी, यह स्मरण करते हुए कि उन्होंने अपने शरणागत जनों की रक्षा में स्वयं प्रलय-ज्वाला सह ली, हर संकट में उनके चरणों को अपना प्रथम और अन्तिम आश्रय बनाएँ।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



## संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), सप्तदश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-17-the-history-of-kaliya-and-the-forest-fire-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-17-the-history-of-kaliya-and-the-forest-fire-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

